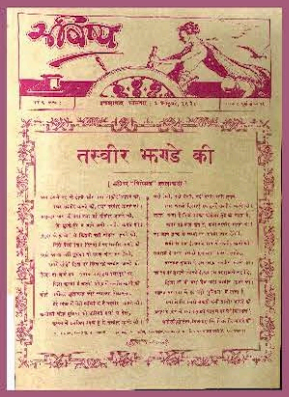

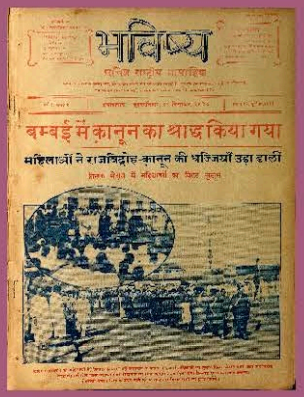

लमही

अप्रैल-जून 2024

ISSN 2278-554- X Lamahi

UGC Care Listed

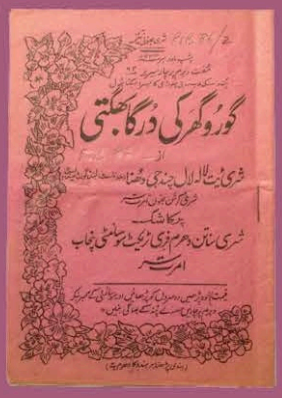

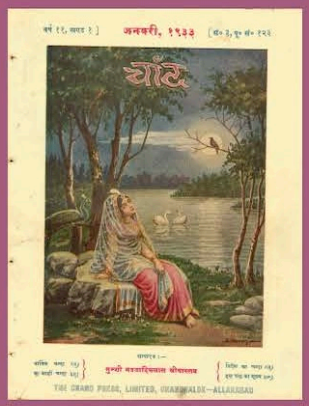

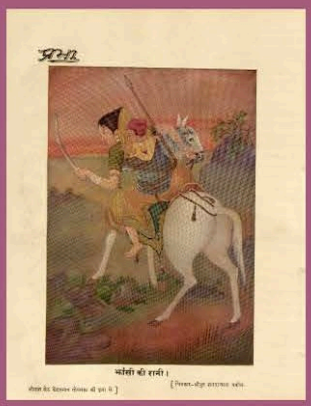

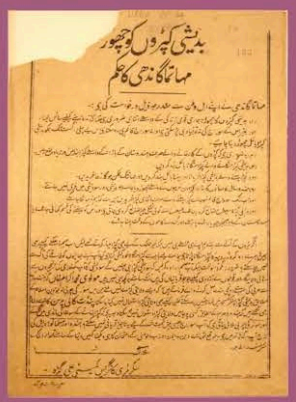

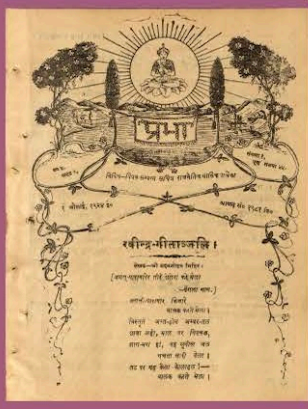

प्रतिबंध और प्रतिरोध/1850-1947

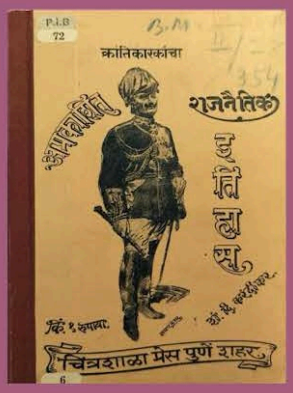

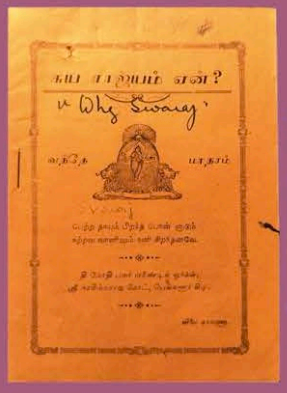

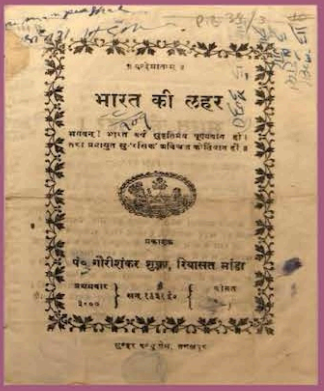

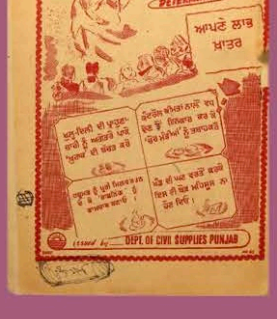

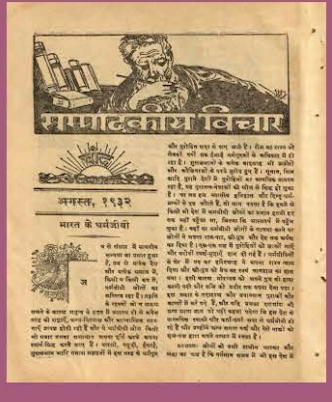

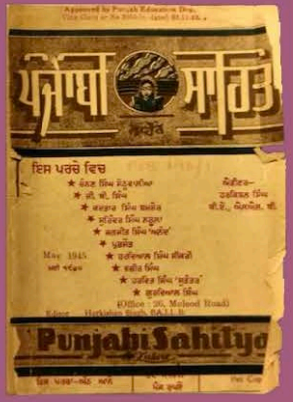

मूल्य : 150/- रुपये मात्र

प्रधान संपादक*
विजय राय

संपादक*
ऋत्विक राय

संयुक्त संपादक*
ऋतिका
वत्सल कक्कड़

इस अंक के अतिथि संपादक*
गजेंद्र पाठक
रविकान्त

सह-संपादक*
आशुतोष कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग*
मृत्युंजय
पंकज यादव
कुमुद रंजन
विकास शुक्ल
मोहम्मद नौशाद

आवरण और साज-सज्जा
मृत्युंजय चटर्जी

टंकण
चंदन शर्मा

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3.343, विवेक खंड, गोमती नगर
लखनऊ-226016 उत्तर प्रदेश
ईमेल: vijairai.lamahi@gmail.com
मो॰ 9454501011

इस अंक का मूल्य : 150/- रुपये मात्र

लमही का वेब अंक आप
www.notnul.com पर पढ़ सकते हैं।

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' और उसके संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।
लमही की स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मंजरी राय के लिए श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, 211 पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित।

*सभी अवैतनिक

वर्ष: 16, अंक: 4, अप्रैल-जून 2024
UGC Care Listed

प्रतिबंध और प्रतिरोध
1850-1947

प्रतिष्ठित संस्थान
INSTITUTION OF EMINENCE

celebrating 60 years
1963-2023

सूची

खंड-1: है क़लम बँधी स्वच्छंद नहीं

उपनिवेशवाद और प्रतिबंधन 15

रविभूषण

स्वाधीनता संघर्ष में प्रतिबंधित क्रांतिचेता साहित्य की मार्मिक कथा 24

विजय राय

औपनिवेशिकता, प्रतिबंधन और पग-पग प्रतिवाद 33

संतोष भदौरिया

उपनिवेशवाद के सन्दर्भ में प्रतिबंधित प्रकाशन 75

निशांत कुमार

प्रतिबंधित साहित्य का देश-काल और 'कैनन' 83

मृत्युंजय

सत्ता का प्रतिरोधी स्वर: प्रतिबंधित साहित्य 98

अखिल मिश्र

प्रतिबंधित हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्त लोकतांत्रिक मूल्य 107

प्राची चौधरी

खंड- 2: लोक और प्रतिरोध

प्रतिबंधित भोजपुरी लोक साहित्य 119

विद्या सिन्हा

प्रतिबंधित साहित्य में लोक गीतों की झंकार 134

राजमणि

राष्ट्रीय आंदोलन और भोजपुरी का प्रतिबंधित साहित्य 173

शुभनीत कौशिक

लोकगीतों में प्रतिबन्ध और लोकवृत्त का दिलचस्प आख्यान 188

उज्ज्वल कुमार सिंह

सागरमल गोपा और रघुनाथ सिंह का मुकदमा 207

रामप्यारी

राजपूताना में प्रेस, भाषा, शिक्षा का प्रसार और प्रतिबंधन की राजनीति 230

भीम सिंह

खंड -3: हिन्दी जनपद से आगे

प्रतिबंध का प्रपंच 244

शशि मुदीराज

तेलुगु का प्रतिबंधित उपन्यास : मालपल्ली 262

अन्नपूर्णा. सी

अरिमर्दन हेतु मातृ आह्वान 270

निरंजन सहाय

उर्दू की प्रतिबंधित शायरी : एक अध्ययन 285

मो. जाहिदुल हक

सआदत हसन मंटो : प्रतिबंधों से परे 298

प्रियदर्शिनी

पंजाबी का प्रतिबंधित साहित्य 308

मंजना कुमारी

'हैदराबाद' : मख़दूम मोहिउद्दीन की प्रतिबंधित पुस्तक 322

जे. आत्माराम

खंड-4: हिन्दी कविता का प्रतिरोधी स्वर

'स्व' का जागरण और ब्रिटिशकालीन प्रतिबंधित गीत 332

प्रदीप त्रिपाठी

प्रतिबंधित साहित्य में राष्ट्रीय चेतना 343

राजवन्ती

खंड-5: जीवन संग्राम की भाषा

प्रेमचंद का 'सोज़े वतन' 356

प्रदीप जैन

स्वाधीनता आंदोलन और प्रतिबंधित गद्य साहित्य 363

रुस्तम राय

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की प्रतिबंधित कहानियाँ 372

संजीव कुमार दुबे

उपनिवेश काल में प्रतिबन्ध और प्रवासी साहित्य 383

अमित कुमार मिश्र

औपनिवेशिक भारत में साहित्यिक प्रतिबंध की संस्कृति और 'देश की बात' 395

कौसर साबिदा सुलताना

आज़ादी के संघर्ष का दहकता दस्तावेज़ : 'आगरा सत्याग्रह संग्राम' 404

मधुलिका बेन पटेल

खंड-6: मदर इंडिया

'मदर इंडिया' और बीसवीं सदी के बुद्धिजीवी 426

सुमन कुमारी

औपनिवेशिक इतिहास लेखन और मिस कैथरीन मेयो की 'मदर इंडिया' 442

अजीत आर्या

खंड-7: हिन्दी पत्रकारिता

'चाँद' का फाँसी अंक : ज़ब्ती का ब्यौरा 464

आशुतोष पार्थेश्वर

चाँद के 'फाँसी' अंक में प्रतिबिंबित स्वाधीनता आंदोलन की छवियाँ 504

एकता वर्मा

रामरख सिंह सहगल 522

गौरव सिंह

खंड- 8: मंच और प्रतिबंध

प्रतिबंधित मराठी नाटक (1875 से 1910 तक) 540

प्रकाश कोपार्डे

ड्रामेटिक परफ़ोर्मेंस एक्ट, पारसी रंगमंच और स्वतन्त्रता आंदोलन 565

सत्यभामा

खंड-9: धरोहर **588**

अरिमर्दन हेतु मातृ आह्वान

निरंजन सहाय

अध्यात्म को दिलकश फरेब की तरह इस्तेमाल करने वाले लोगों के सामने जीवन संघर्ष या उसकी ताप से पैदा हुआ अध्यात्म एक चुनौती की तरह आता है। यह चुनौती राजसत्ता, धर्मसत्ता और अर्थसत्ता के लिए विकट स्थिति पैदा कर देती है। ज़िन्दगी के इस मोर्चे पर डटे अनेक नायक हमें स्वाभाविक रूप से याद आ जाते हैं। चार्वाक, बुद्ध, सरहपा, रैदास, कबीर आदि-आदि। भारतीयता की इसी सुवास की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं- महर्षि अरविन्द। बरतानी हुकूमत के ख़िलाफ़ षडयंत्र रचने वालों में उनका नाम शुमार किया गया। अंग्रेजों ने उन्हें लम्बे समय तक अलीपुर जेल में इसलिए बंद रखा कि उनपर उस समूह का सक्रिय सदस्य और मार्गदर्शक होने का आरोप था जो बम बनाने की फैक्ट्री से बरतानी हुकूमत के क्रूर सरमायेदारों की हत्या की रणनीतियों तक को अंजाम तक पहुँचाने के काम में शरीक था। अलीपुर जेल में रहते हुए उन्होंने तीव्र अन्तर्द्वन्द्व और आत्म साक्षात्कार से गुज़रते हुए एक बहुत बेहतरीन और मानीखेज किताब लिखी- भवानी-भारती। लम्बे समय तक वह किताब अकादमिक दुनिया से ओझल रही।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग और विकासशील समाज अध्ययन संस्थान, दिल्ली द्वारा आयोजित `प्रतिबंधित संस्कृत साहित्य' विषयक व्याख्यान में इस किताब का ज़िक्र करते हुए कहा,`जेल हो गई तो उनको कुछ विजन्स आते थे, उसी में भारत माता उनको दिखी, कुछ श्लोक उदित होने लगे उनको। उन्होंने उस रात जो स्वप्नाविष्ट दशा में अनुभव किया, उसे लिखना शुरू कर दिया और निन्यानवे श्लोक उन्होंने लिखे। उस काव्य का उन्होंने शीर्षक नहीं दिया। अद्भुत श्लोक हैं वो अरविंद के। उस पांडुलिपि

को ज़ब्त कर लिया गया, वे जेल से छूटकर आये। अरविंद भी उसको भूल-भाल गए। उसके बाद वे पांडिचेरी चले गए और अपनी योग साधना में लग गए। उन्होंने कह दिया कि अब मेरा पथ अलग होता है। राजनीति से ही अलग हो गए। उस किताब के बारे में भी भूल गए। कहीं से वो किताब मिली, मेरे ख्याल से 1975 के बाद पुराने रिकॉर्ड में जेल से वो किताब मिली। यह प्रमाणित हुआ यह तो अरविंद की लिखी हुई है। वह पांडुलिपि पांडिचेरी के अरविंद आश्रम के आर्काइव में रखी हुई है। हमने 1980 के आसपास एक सेमिनार किया था सागर में, आधुनिक संस्कृत साहित्य पर। उसमें एक सज्जन थे, हमारे मित्र हैं मुरलीधर कमलाकांत, उन्होंने 'भवानी भारती' पर अपना पर्चा पढ़ा। तो उन्होंने जब श्लोक पढ़ना शुरू किया, उसका हिन्दी अनुवाद बताना शुरू किया तो लोग चौंके।'[12] भवानी -भारती पुस्तक संस्कृत वांग्मय के उस समृद्ध इतिहास का हिस्सा बनी जिसने आजादी की लड़ाई के दौरान आह्वान गीतों को सम्भव किया। इस आलेख में उस कविता की अर्थछवियों के अनेक रोशन हिस्सों को समझने की कोशिश होगी जिनसे सभ्यता और संस्कृति विमर्श के विविध और अल्पख्यात हिस्से पुरनूर अहसास के साथ प्रकट हुए। पहले उस पीठिका का अनावरण ज़रूरी है जिससे यह पता चले कि आखिर महर्षि अरविन्द अलीपुर जेल पहुँचे कैसे!

1

महर्षि अरविन्द की गिरफ्तारी की पृष्ठभूमि में बरतानी हुकूमत के **डगलस हॉलिन्सहेड किंग्सफोर्ड,** कोलकाता के चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी अहम् थी। भारत की आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाले क्रांतिकारियों को अपमानित करने और उन्हें दण्ड देने के लिए वह मजिस्ट्रेट बहुत बदनाम था। इस मजिस्ट्रेट ने खुदीराम बोस समेत अनेक क्रांतिकारियों को न

[12] त्रिपाठी राधावल्लभ,प्रतिबंधित संस्कृत साहित्य, अपनी माटी, सम्पादक- गजेन्द्र पाठक, पृष्ठ संख्या 13, 2022

सिर्फ़ लोमहर्षक यंत्रणाएँ दीं अपितु अनेक पत्रों और उनके सम्पादकों को नेस्तनाबूद करने का प्रयास किया जो बंग भंग आन्दोलन और बरतानी हुकूमत के ख़िलाफ़ सक्रिय थे। किंग्सफ़ोर्ड ने विवेकानंद के भाई भूपेंद्रनाथ दत्ता के सम्पादन में निकालने वाली पत्र `जुगंतर' और उसके अन्य संपादकों के मुकदमों की सुनवाई की थी और उन्हें कठोर सज़ा सुनाई थ। किंग्सफ़ोर्ड ने प्रेस को ज़ब्त करने का आदेश दिया था और भूपेंद्रनाथ दत्त को एक साल की कैद की सज़ा भी सुनाई थी। इस फ़ैसले ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ विद्रोह में आग में घी का काम किजनविद्रोह को भड़काने में आग में घी का काम किया। लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा की किताब खुदीराम बोस इस पूरे प्रकरण पर विस्तार से विचार करती है। बीबीसी के ख्यातनाम पत्रकार रेहान फज़ल ने इस किताब के हवाले से लिखा है,` 8 अप्रैल, 1908 को 17 वर्षीय खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को डगलस किंग्सफ़ोर्ड की हत्या का दायित्व सौंपा गया। इससे पहले क्रांतिकारियों ने किंग्सफ़ोर्ड को एक पार्सल बम भेजकर मारने की कोशिश की थी। लेकिन वो पार्सल उन्होंने नहीं खोला, पार्सल खोलते हुए एक अन्य कर्मचारी घायल हो गया। इस बीच क्रांतिकारियों की गतिविधियों से डरकर किंग्सफ़ोर्ड ने अपना तबादला बंगाल से दूर बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर में करवा लिया। युगांतकारी संगठन की ओर से खुदीराम को दो पिस्तौल और प्रफुल्ल चाकी को एक पिस्तौल और कारतूस देकर मुज़फ़्फ़रपुर भेजा गया। हेमचंद कानूनगो ने उन्हें कुछ हैंडग्रेनेड भी दिए गए।'[13] बंगाल के क्रांतिकारियों ने जब प्रफुल्ल चाकी एवं खुदीराम बोस को इनकी हत्या के लिये तैयार किया तब वे मजिस्ट्रेट के पीछे-पीछे बिहार के मुजफ्फरपुर पहुँच गए। दोनों ने किंग्सफोर्ड की दैनिक जीवन की निजी और प्रशासनिक गतिविधियों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। कुछ ही दिनों बाद 30 अप्रैल 1908 ई॰ को किंग्सफोर्ड पर उस समय बम से हमला किया गया जब वह बग्घी पर सवार होकर यूरोपियन क्लब से बाहर निकल रहा था। पर हुआ यूँ

[13] https://www.bbc.com/hindi/india-63834537

कि जिस बग्घी पर बम फेंका गया था उस पर उस समय किंग्सफोर्ड सवार नहीं था बल्कि बग्घी पर दो यूरोपियन महिलाएँ सवार थीं। वे दोनों इस हमले में मारी गईं। इसके बाद प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस घटनास्थल से फरार हो गए। बाद में दोनों हमालावरों ने अलग-अलग दिशाओं में यात्रा शुरू की। पर दुर्भाग्यवश खुदीराम पकडे गए जबकि प्रफुल्ल चाकी ने खुद को गोली मार ली। इस घटना के बाद खुदीराम बोस को फांसी की सज़ा दी गयी। इतिहास गवाह है, 11 अगस्त, 1908 को सुबह 6 बजे बरतानी हुकूमत ने पहली बार एक किशोर स्वाधीनता सेनानी को फांसी दी। उस समय उनके हाथ में गीता की एक प्रति थी और उनकी उम्र थी 18 साल, 8 महीने और 8 दिन। जेल के बाहर जनसमर्थन का सैलाब उमड़ पड़ा और वन्दे मातरम का जयघोष होने लगा। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने खुदीराम बोस की शहादत पर अनेक लेख लिख बड़ी भारतीय आबादी तक इस घटना को पहुँचाने का काम किया। लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा पुणे से प्रकाशित मराठा के 10 मई, 1908 के अंक में उन्होंने लिखा, "यह चरम प्रतिवाद को साकार रूप में प्रस्तुत करने के लिए चरम विद्रोह का मार्ग है और इसके लिए अंग्रेज़ सरकार ही ज़िम्मेदार है।" पूरे भारत में खुदीराम बोस की तस्वीरों का वितरण किया गया। अपने एक व्याख्यान में हिन्दी साहित्यकार बालकृष्ण भट्ट को खुदीराम बोस को श्रद्धांजलि देने के अभियोग में अध्यापक पद से इस्तीफा देना पड़ा। खुदीराम बोस की जन स्वीकार्यता का आलम यह था कि उनके चित्र को प्रेमचंद ने अपने अध्ययन कक्ष की दीवार पर स्थान दिया था। खुदीराम बोस की शहादत का सबसे बड़ा असर विद्यार्थी समूह पर पड़ा। इस घटना के बाद विद्यार्थियों ने शिद्दत से वन्दे मातरम और 'आनंदमठ' का अध्ययन शुरू कर दिया। **नूरुल होदा** ने अपनी किताब **'द अलीपुर बॉम्ब केस'** और लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा ने `**खुदीराम बोस**' पुस्तक में दर्ज किया, `बंगाल के दस्तकारों ने एक ख़ास धोती बुननी शुरू कर दी जिसके किनारे पर खुदीराम लिखा रहता था. पीताम्बर दास ने उनके सम्मान में एक गीत लिखा था जो आज भी

बंगाल के घर-घर में गाया जाता है। यह गीत है 'ऐक बार बिदाए दे मा घूरे आशि' (एक बार विदा तो दे माँ, ताकि मैं घूम कर आ जाऊँ)।इस गीत की आख़िरी पंक्तियों में लिखा है- दश माश दश दिन पोरे, जन्मो नेबो माशीर घरे मा गो, तॉखोन जोदी ना चीनते पारिश, देखबी गोलाए फांशी (ओ माँ, आज से 10 महीने 10 दिन के बाद मैं मौसी के घर फिर जन्म लेकर लौटूँगा, अगर मुझे न पहचान पाओ तो मेरे गले में फाँसी से फंदे का निशान देखना)।[14] दूसरी तरफ पुलिस महकमे और बरतानी ख़ुफ़िया विभाग ने इस घटना की पृष्ठभूमि रचने वालों की सघन शिनाख्त का सिलसिला चलाया। ताबड़तोड़ छापे मारे गए और महर्षि अरविंद समेत अनेक लोगों को गिरफ्तार किया गया।

2

महर्षि अरविन्द ने पहले चौदह फिर छब्बीस लोगों की विभिन्न चरणों में गिरफ्तारी का ज़िक्र करते हुए लिखा, `1908 का वर्ष, शुक्रवार, मई का पहला दिन। मैं `बन्दे मातरम्' कार्यालय में बैठा था, तभी श्रीजुत श्यामसुन्दर चक्रवर्ती ने मुझे मुजफ्फरपुर से एक तार दिया। इसमें मुज़फ़्फ़रपुर में एक बम विस्फोट से संबंधित जानकारी थी जिसमें दो यूरोपीय महिलाओं की मौत हो गई थी। मुझे "एम्पायर" अखबार के दिन के अंक से यह भी पता चला कि पुलिस आयुक्त ने इस जानलेवा कृत्य में शामिल लोगों की पहचान का दावा किया था और उनकी शीघ्र गिरफ्तारी का आश्वासन दिया था। मुझे उस समय पता नहीं था कि मुख्य संदिग्ध कोई और नहीं बल्कि मैं ही था और पुलिस जांच में मुझे मुख्य आरोपी के साथ-साथ युवा राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों के सर्जक और गुप्त नेता के रूप में दिखाया गया था।1.मई.1908 को मुजफ्फरपुर में बम विस्फोट के बाद पुलिस आयुक्त ने एक आपातकालीन बैठक बुलाई। 2.मई.1908 के

[14] https://www.bbc.com/hindi/india-63834537

शुरुआती घंटों में, पुलिस ने कैलुट्टा में कई स्थानों पर एक साथ छापेमारी की और श्री अरबिंदो सहित लगभग बीस संदिग्ध क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया, जिन्हें उनका असली नेता माना जाता था। पुलिस हथियार, गोला-बारूद, विस्फोटक और अन्य दस्तावेजी साक्ष्य बरामद करने में सफल रही। छापेमारी पूरे महीने जारी रही और अन्य गिरफ़्तारियाँ की गईं, जिससे कुल संख्या लगभग चालीस हो गई।'[15] इस तरह श्री अरविन्द को 02.मई.1908 को विभिन्न 'षड्यंत्रों' और क्रांतिकारी गतिविधियों में संलिप्तता के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें अलीपुर जेल में विचाराधीन कैदी के रूप में रखा गया। इस दरमियान उन्होंने पूरा एक साल अलीपुर कारावास में व्यतीत किया, जबकि बरतानी हुकूमत ने एक लंबे अदालती मुकदमे अलीपुर बम केस में उन्हें विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियों में फँसाने का भी प्रयास किया। उनपर खतरनाक मुजरिम होने का अभियोग लगाया गया और उन्हें कुछ समय के लिए एकान्त कारावास की सज़ा भी दी गयी । पुलिस ने 2 मई, 1908 को अलसुबह 32, मुरारीपुकुर रोड स्थित एक मकान पर छापेमारी की। फिर एक बम-फैक्ट्री की भी खोज की गई, साथ ही हथियारों का जखीरा, बड़ी मात्रा में गोला-बारूद, बम, डेटोनेटर और अन्य उपकरण भी बरामद किए गए। वहाँ मौजूद बड़ी मात्रा में क्रांतिकारी साहित्य को जब्त कर लिया गया, और जिन चौदह कैदियों को हिरासत में लिया गया, उनकी पहचान सार्वजनिक की गयी-बरिन्द्र कुमार घोष, उल्लासकर दत्त, इंदु भूषण रॉय, नोलिनी कांता गुप्ता, विभूति भूषण सरकार, बिजय कुमार नाग, सचिन्द्र कुमार सेन, उपेन्द्र नाथ बनर्जी, नरेंद्र नाथ बख्शी, परेश चंद्र मौलिक, कुंजोलाल साह, शिशिर कुमार घोष, हेमेंद्र घोष और पूर्णचंद्र सेन।

इस दरमियान पुलिस ने कलकत्ता में कई अन्य स्थानों पर भी छापे मारे और कई अन्य क्रांतिकारियों को हिरासत में ले लिया। मई के महीने में पूरे बंगाल में कई जगहों पर छापेमारी

---

[15] https://www.sriaurobindoinstitute.org/saioc/Sri_Aurobindo/calcutta/prison_cell_alipore_presidency_jail

जारी रही और अनेक गिरफ्तारियाँ हुई। गिरफ्तार मुजरिम थे- हेम चंद्र दास, कनाईलाल दत्त, सुशील सेन, हृषिकेश कांजीलाल, सुधीर कुमार सरकार, निरापोदो रॉय, अशोक नंदी, नागेन्द्र नाथ गुप्ता, धरणी नाथ गुप्ता, बिजॉय रत्ना सेनगुप्ता, मोतीलाल बोस, हेम सेन, बीरेंद्र सेन, डिंडोयल बोस, नरेंद्र नाथ गोसाईं, बीरेंद्र नाथ घोष, कृष्णा जिबोन सान्याल, देबब्रत बोस, चारु चंद्र रॉय, इंद्र नाथ नंदी, निखिलेश्वर नाथ मौलिक, बिजय चंद्र भट्टाचार्य, प्रोवास चंद्र देब, बालकृष्ण हरि केन। इन्हें विचाराधीन कैदी के रूप में अलीपुर जेल में रखा गया।[16] इन सभी गिरफ्तारियों के सिलसिले और षड्यंत्रों के आलोक में अरविन्द को पुलिस ने मुख्य अभियुक्त बनाया। सरकार की तरफ से केस की पैरवी करने के लिए मद्रास प्रेसिडेंसी के एक नामी वकील यार्डली नॉर्टन को बुलाया गया था जबकि बचाव पक्ष के वकील थे-चितरंजन दास। अनेक लम्बी जिरहों के बाद 06 मई 1908 को इस मामले में न्यायाधीश का फैसला आया। अरबिंदो और उनके साथ सोलह और लोगों को रिहा कर दिया गया। बरिन दास एवं उलास्कर दत्त को इस मामले में फाँसी की सजा मुक़र्रर हुई बाद में यह फैसला आजीवन कारावास में तब्दील कर दिया गया। तेरह और लोगों को आजीवन कारावास की सजा मिली।

अलीपुर बम काण्ड केस उस समय भारत के सबसे बड़े मुकदमों में से एक साबित हुआ था। सरकार अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद इस मामले में अरबिंदो को सजा नहीं दिलवा पाई थी। इसी केस के दौरान अरबिंदो के कई लेख देश-विदेश के अखबारों में छपे और बंगाल क्रांति की खबर दुनिया भर में फ़ैली। कहते हैं इसी के चलते साल 1910 में सरकार को प्रेस एक्ट लागू करना पड़ा। इस कानून के बाद क्रांतिकारी विचारों को प्रेस में छापने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इस मुकदमे के दौरान एक और उल्लेखनीय घटना घटी। अरबिंदो घोष जब रिहा हुए तो उनका मन पूरी तरह से बदल चुका था। उन्होंने राजनीति से संन्यास की घोषणा कर

[16] https://www.sriaurobindoinstitute.org/saioc/Sri_Aurobindo/calcutta/prison_cell_alipore_presidency_jail

दी। उन्होंने आध्यात्मिक अभियान हेतु आगे के जीवन को समर्पित कर दिया। पुदुच्चेरी में अरबिंदो आश्रम बनाया और इसके बाद दुनियाभर में श्री अरबिंदो के नाम से जाने जाने लगे।

3

बांग्ला जनमानस में शाक्त उपासना की केन्द्रीय भूमिका रही है। शाक्त मत की सबसे महत्त्वपूर्ण देवियों में काली का नाम शुमार किया जाता है। मान्यतानुसार उनमें अनेक असंगत गुणों का वैभव साथ-साथ प्रवाहित है। वह दिव्य भी हैं और शैतानी भी। पारम्परिक सांस्कृतिक आख्यानों में वर्णित रूप के मुताबिक़ वे अपनी जीभ बाहर निकाले हुए हैं, वह बेलगाम क्रोध और प्रचंड शक्ति का प्रतीक हैं। कटे हुए सिरों की माला से सजी और अपने पति भगवान शिव के शरीर पर खड़ी हैं। देवी काली एक आकर्षक और भयावह आकृति बनाती हैं। एक साथ भयावह और विस्मयकारी, माँ काली प्रतिशोध और शक्ति, महिला शक्ति के सर्वोत्कृष्ट अवतार के रूप में समादृत हैं। पश्चिम बंगाल में उन्हें परम शक्ति, विनाश और परिवर्तन के साथ-साथ समय की देवी के रूप में भी पूजा जाता है ('काली' शब्द 'काल' का स्त्रीलिंग रूप है, जिसका अर्थ समय होता है)। पश्चिम बंगाल में देवी काली को बुरी शक्तियों का विनाशक माना जाता है और तांत्रिक उन्हें आदि शक्ति के रूप में भी पूजा करते हैं. काली माँ या देवी काली के कई नाम हैं, जैसे महाकाली, भवतारिणी, शमशान काली, दक्षिणकाली, सिद्धेश्वरी काली, और भद्रकाली। प्रसंगवश यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि महाकवि निराला बंगाल के महिषादल में पले-बढ़े और उनकी मानसिक निर्मितियों को गढ़ने में इस सांस्कृतिक परिदृश्य ने कितनी निर्णायक भूमिका निभायी होगी इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि उन्होंने हिन्दी

की कालजयी कविता `राम की शक्ति पूजा' में भी थके, टूटे, हताश और निराश राम को शक्ति की मौलिक उपासना करते चित्रित किया गया है।

पराधीन भारत के नैराश्य ढंके बादलों के बीच अरविन्द की कविता भवानी-भारती स्फुलिंग की तरह आती है। यह अराधना इसलिए भी दीगर है कि यह आम प्रार्थना गीत की तरह आत्मोत्थान या आत्म परिधि में ही नहीं विचरती बल्कि भारत की विराट आबादी की परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ने के आह्वान गीत के रूप में हमारे सामने आती है। कवि की नज़र में भारत की आज़ादी का संघर्ष का सिरा अखिल विश्व से जुड़ा मसला है। यह अकारण नहीं है कि संस्कृत साहित्य के वरिष्ठ आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी अपनी किताब `स्वतंत्रता संग्राम और संस्कृत' में लिखा है, 'श्री अरविंद का यह काव्य स्वतन्त्रता संग्राम के यज्ञ में एक सार्थक आहुति है। स्वप्नदर्शी कवि भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के द्वारा समग्र विश्व में होने वाली उथल पुथल और उसकी परिणति में आने वाले परिवर्तनों को साक्षात् देखता है।'[17] अरविंद ने स्वप्नाविष्ट भावसिद्ध चित्त दशा भवानी के रूप में भारतमाता का साक्षात्कार किया। फिर `भवानी-भारती' शीर्षक इस कविता के 99 श्लोकों की अधूरी रचना का प्रणयन किया। गौरतलब है इस कविता का वे न तो संशोधन/परिमार्जन कर पाए। न ही उसे किसी शीर्षक से उन्होंने नवाजा। कलकत्ता पुलिस द्वारा इसकी पांडुलिपि जप्त कर ली गई। बाद में अरविंद की जीवनधारा ही बदल गई, जिसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है। बहुत दशकों बाद जब अरविंद आर्काइव्स में पांडुलिपि मिली तब अरविंद आश्रम ने इसे प्रकाशित किया। भवानीभारती शीर्षक इस दृष्टि से दे दिया गया कि इसके रचनाकाल के समय एक भवानीमंदिर के निर्माण की योजना अरविंद के मानस में थी। भवानीमंदिर निर्माण की अवधारणा के पीछे यह मंशा थी कि प्रत्येक भारतवासी माता भवानी का आकुल आह्वान सुने। अपने चित्त को भारती

---

[17] त्रिपाठी राधावल्लभ, स्वतंत्रता संग्राम और संस्कृत, पृष्ठ संख्या-72, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली, 2022

का मंदिर बन जाने के लिये अर्पित कर दे। इस कविता का जन्म भी इसी अवधारणा से हुआ। आज भी इसे पढ़ते हुए पाठक इस कविता के श्लोकों में अग्निज्वाल का अनुभव करता है। राधावल्लभ त्रिपाठी ने लिखा है,`माँ भवानी या भारतमाता के जिस रूप का साक्षात्कार अरविंद करते हैं और कराना चाहते हैं, वह सारे देवमंडल से अलग, उनके अपने समकाल में जन्म ले चुका हुआ एक अद्भुत नया देव है। श्री अरविंद का यह काव्य स्वतन्त्रतासंग्राम के यज्ञ में एक सार्थक आहुति है। स्वप्नदर्शी कवि भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष के द्वारा समग्र विश्व में होने वाली उथल पुथल और उसकी परिणति में आने वाले परिवर्तनों को साक्षात् देखता है।'[18] ध्यान देने की बात है कि आज़ादी की लड़ाई के दरमियान अध्यात्म की परिधि में उन नए स्फुलिंगों का भी उदय हो रहा था जो भारतीय जन की उस आकांक्षा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिनमें बरतानी हुकूमत के ख़िलाफ़ जन उभार मुखर हो रहा था।

4

भवानी भारती में ग्यारह-अक्षरों वाले *त्रिष्टुभ समूह*[19] *के तीन अलग-अलग मीटरों में 99* छंद हैं, जो वीरता, शक्ति, क्रोध, युद्ध को व्यक्त करने के लिए एक उपयुक्त विकल्प है। जैसा पहले उल्लेख किया जा चुका है, लिखे जाने के तुरंत बाद दुर्भाग्य से इसे कलकत्ता पुलिस ने जब्त

---

[18] वहीं, पृष्ठ संख्या 118

[19] शाश्वती, एन.सी.ईआर.टी.,पृष्ठ संख्या 103, मार्च2024,वैदिक मन्त्रों में गेयता का समावेश करने के लिए जिन छन्दों का प्रयोग हुआ है उनमें गायत्री, अनुष्टुप् तथा त्रिष्टुप् प्रमुख हैं। गायत्री: जिस छन्द के तीन चरण हों, प्रत्येक चरण में आठ वर्ण हों वह गायत्री छन्द होता है। इसका पाँचवाँ वर्ण लघु तथा छठा वर्ण गुरु होता है|उदाहरण- पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं बष्टु धिया बसु ॥ (यजुर्वेदः -40/1) अनुष्टुप् : अनुष्टुप् छन्द में चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्| देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ।। त्रिष्टुप् : जिस छन्द के चार चरण हों और प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर हों वह त्रिष्टुप् छन्द होता है। उदाहारण- समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ (ऋग्वेदः 10/192/3)

कर लिया था। आज़ादी मिलने पर दशकों बाद 1985 में, श्री अरबिंदो आश्रम ने इसे पहली बार पुनः प्राप्त किया और प्रकाशित किया, इसे उपयुक्त शीर्षक दिया गया- *भवानी भारती* ।

यह कविता मौजूदा दौर में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितना बीते ज़माने में थी। भारतवर्ष अभी भी उन बंधनों और बेड़ियों में जकड़ा हुआ है जिसे दूर करने का मुक्तिकामी सपना गुलाम भारत में देखा गया था। सत्ता तंत्र नियंत्रित करने वाले अत्याचारियों का आगमन और अवसान होता रहता है, चेहरे ,रंग और मुखौटे वक्त के हिसाब से बदलते रहते हैं। इन सबके बीच, देश अपनी जमीन पर खड़ा और तना रहता है, वह कभी थोड़ा झुकता है, तो कभी क्रोध और आग से पलटवार की मुद्रा अख्तियार करता है। कविता एक जादुई यथार्थ के वितान को रचती है। कई बार घटनाओं की शृंखला समझ से परे नज़र आती है। अनेक बार इस धरती पर अंतहीन पीड़ा हावी हो जाती है, जो उससे दर्द की ऊंची चीख छीन लेती है। जब सब कुछ अप्राप्य लगता है, अंधेरे बादलों के नीचे खो जाता है, तभी एक तीव्र प्रकाश की एक किरण नज़र आती है, जो अंतहीन रात के क्रोध भरे आवरण को भेदती हुई, सघन बादलों को टुकड़ों में तोड़ती हुई दिखाई देती है। कैसे? यह नयी शक्ति आयी कहाँ से? शक्तिशाली शक्ति , मुक्तिकामी स्फुलिंग! इस अविरल शक्ति का स्रोत क्या है? शक्ति की सुखद लीला बड़ी अचरज भरी है। उसमें मौजूद रीतियाँ अनेक उलझनों से भरी हैं।

कविता में हम एक परिचित दृश्य देखते हैं। कविता की शुरुआत एक भारतीय मनुष्य से होती है, जो नींद में है और संतुष्ट है। जबकि प्रतिगामी शक्तियाँ उसके पैरों के नीचे की धरती को ही चीर रही हैं। उस परिवेश के रहवासी भी मातृभूमि की लूट से बेख़बर हैं। अपने सुख-सुविधाओं के द्वीप पर विचरते, सुख की दुनिया को गले लगाते हुए लोग खुद में ही मशगूल हैं। मातृभूमि की आतुर पुकार सुनने में लोग असमर्थ हैं। फ़िर काली अपना भयंकर और विकराल रूप प्रकट करती हैं, जिससे पृथ्वी उसकी गरजती हुई पुकार से काँप उठती है। काली उन लोगों

का तिरस्कार करती है जो आज उसके चरणों में बेख़बर लेटे हैं और उन्हें उन वीर योद्धाओं का नपुंसक संस्करण मानती हैं जिन्होंने माँ की पूजा की, उन्हें बचाने और उनकी रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, अपना खून बहाया। वे वीरता को शृंगार मानने वाले कहाँ चले गए हैं? अपने अस्तित्त्व और अतीत से बेख़बर आखिर वे कौन लोग हैं जो इस वक्त यहाँ खड़े हैं? क्या वे अपनी आँखों से उस नग्न यथार्थ को नहीं देख सकते, जो स्पष्ट रूप से प्रकट है? क्या वे माँ की दुर्दशा से भयाक्रांत नहीं होते जो भूख और प्यास के दारुण दुःख झेलकर इस दयनीय स्थिति में खड़ी हैं? उन्हें यह अनुभव क्यों नहीं होता कि, *"जहाँ भी महान नायक और जन नेता अपनी जाति के उत्थान के लिए निरंतर आत्म-बलिदान में लगे होते हैं, उन राष्ट्रों के प्रति काली कृपा करती हैं... ?"* वह अपने वक्ष पर पड़ी जड़ता से पराभूत नहीं होतीं बल्कि विवश होकर, वह अपने आगमन की घोषणा विजय के नगाड़ों से नहीं, बल्कि भूकंप और अकाल से करती हैं और प्राचीन भरत की आत्मा से प्रार्थना करती है... " *उठो, उठो, हे सोये हुए सिंहों* " उनका यह आह्वान जागृत सेनाओं की गर्जना में एकीकृत होकर घोषित होता है, " *खलनायक का नाश हो* ।" यह आह्वान इस अर्थ में अद्वितीय है कि इसमें अखिल भारतीय चेतना को समाहित करने का विराट सन्देश मुखर है, यहाँ धार्मिक संकीर्णताओं से परे जाकर आर्येतर धर्मों के भारतीय अनुयायियों के लिए भी विराट उद्घोष मुखर है-

भो भो अवन्त्यो मगधश्च वङ्गा अङ्गा कलिङ्गा कुरवश्च सिन्धो।

भो दाक्षिनत्यः श्रीनुतन्ध्रचोल वासन्ती ये पञ्चनदेशु शूराः ।। २३।।[20]

अर्थात हे अवंती और मगध, वंगा, अंग और कलिंग के लोगों, हे कुरु और सिंध के लोगों, तुम और तुम, मेरी बात सुनो! हे दक्षिणवासियों, तुम आंध्र और चोल देश के लोगों, और तुम पाँच नदियों की भूमि के नायकों;

---

[20] https://surasa.net/aurobindo/bhavani.php

ये के त्रिमुर्ति भजतैकमईशाम् ये चैकामुर्ति यवना मदियः ।

मातह्वये वस्तनायन्हि सर्वान् निद्रां विमुञ्चध्वमये श्रीनुध्वम् ।। २४।।[21]

तुम जो एक ही भगवान के त्रिगुणात्मक स्वरूप की पूजा करते हो और तुम, मेरे मुसलमान पुत्रों, जो उसकी अद्वितीयता में उसकी पूजा करते हो: मैं, माँ, तुम सबको बुलाती हूँ, क्योंकि सभी मेरे बच्चे हैं। अपनी नींद से उठो! अरे, सुनो!

कालस्य भेरिम श्रीनुतदृषिड्गे रौद्रं कृतान्तं मम दुतरूपम् ।

दुर्भिक्षमेतअनाथ भूमिकम्पन निबोधतअधिषतमअगतस्मि ।। २५।[22]

पर्वत शिखरों पर काल की ध्वनि सुनो। निर्दयी मृत्यु को देखो, मेरे दूत। अकाल और भूकम्प यह घोषणा करते हैं कि मैं अपनी पूरी शक्ति के साथ आ गया हूँ।

काली अपनी शक्ति और सामर्थ्य के साथ आगे कदम बढ़ाती हैं, उनके आगे-पीछे दौड़ने वाली संततियों में अदम्य साहस की अनुगूँज है, और जब तीनों लोक धर्मयुद्ध के लाल-लाल रंग से आप्लावित हो जाते हैं, तब वह अभिमानी और विद्रोही राक्षस अंधकार की गुफाओं में दहाड़ता है, जो उसे घेरे हुए हैं, "इस *संसार में ऐसा कौन है जो मेरे बराबर हो ?*"

प्रतिपक्ष की जाग्रत और सुनहरी रोशनी शाश्वत है। वह मंथर गति से बुराई के अन्धकार को चीरती अपना पंथ निर्मित करती है, धूसर रंग के कणों को तोड़ देती है। भवानी की प्राचीन सुंदरता में प्रवेश करती है, अपनी कोमल, निर्दोष चमक के साथ कुरूपता को दूर करती है। सब कुछ उसकी स्नेहिल उपस्थिति से चमकता है। उसकी सुंदरता समस्त परिवेश दीप्तिमान हो उठता है। वहाँ सुंदर भवानी की छाया में भारतीय मन विजयी और उल्लासित नृत्य करती हुई काली के रूप को देखता है। भ्रम दूर हो जाता है। *काली , भवानी , चंडि ,अन्नपूर्णा , राधा ...*

---

21 वही

22 वही

माँ अपने सभी रूपों में, सूर्य की असंख्य किरणों की तरह, ईश्वरीय स्तुति और सांसारिक अभिवादन को जगाती हैं। " *तुम सर्वोच्च देवी हो, तुम प्राणियों की माता हो; और किसमें शक्ति है? प्रभुत्व, सर्वोच्चता और दोषरहित चमक तुमसे उपहार हैं, ऐश्वर्यशाली; तुम इन्हें देती हो, जब तुम क्रोधित होती हो तो संहार कर डालती हो।"*

धर्म, सदाचार का शाश्वत नियम एक बार फिर सामने आता है। ज्वालाएँ स्वर्ग तक चिंगारियों का विस्तार करती हैं... *वेद के जाप से फैली ज्वालाएँ,* ज्ञान का उत्कर्ष, बुद्धि की चिंगारियाँ। धन, वैभव, कानून और भक्ति एक बार फिर भारतीय परिधान धारण करते हैं, बच्चे एक साथ देवी के पास जाते हैं और कृतज्ञता और श्रद्धा के साथ , उनसे एक बार फिर शाश्वत सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं... *"दयालु हो, महान देवी; भारतीय लोगों के दिलों में लंबे समय तक निवास करो!"... "हमेशा दयालु रहो और, हे शक्तिशाली, दुनिया की भलाई के लिए।* "दुनिया भर में राष्ट्रों के समक्ष अज्ञानता और जड़ता के वृत्त अनेक बार आते हैं। भारत भी इससे अलग नहीं है। लेकिन चुपचाप *तमस के आगे समर्पित हो जाना,* बिना संघर्ष के समर्पण कर देना, भारतीय तरीका नहीं है। श्री अरबिंदो के अनुसार, राष्ट्र "न तो धरती का टुकड़ा है, न ही कोई अलंकार है, न ही मन की कल्पना है। यह एक महान शक्ति है, जो राष्ट्र को बनाने वाली लाखों शक्तियों से बनी है।"

भारती के जातीय अनुभवों को काव्य पंक्तियों में पिरोकर अधिकाधिक जन तक पहुँचने का संकल्प काव्यानुभूति की बुनावट को सघनता प्रदान करता है, एक उदाहरण देखिए,

`शिवस्य काश्याम निवासन्ति ये के मुक्ताः शिवस्पर्शेन भवन्ति देव्याः ।

पादर्पणेनैव तु पावनेन सर्वार्यभूमिजगतो.अपि काशी ।। 97।।[23]

---

[23] वही

यानी जैसे शिव की पवित्र नगरी काशी में निवास करने वाले भगवान के शुभ स्पर्श से मुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार यह समस्त आर्य देश, जहाँ देवी ने अपने पावन चरण रखे हैं, संसार की काशी बन जायेगा। *भवानी भारती* एक प्रार्थना है, जो इस धरती के नीचे गूंजती है, तथा सदैव राष्ट्र की माता, शक्ति का, स्वयं राष्ट्र का आह्वान करती है।

यह संस्कृत कविता विराट और समावेशी धार्मिक अनुभवों एवं बिम्बों से खुद को सुसज्जित कर जिस काव्यात्मक रूपांतरण को रचती है वह स्वाधीनता समर का बेमिसाल संदर्भ है।